UP Board Notes for Class 12 English Poetry Short Stories Chapter 2 An Astrologer's Day

An Astrologer's Day Story In Hindi Story At A Glance

Once in a town on a busy crossing an astrologer used to sit under a tamarind tree from morning till evening. He was so dressed and with all his equipments spread before him that the people were attracted towards him in a large number. He also answered their questions in such a way that most of them were satisfied. One evening when the astrologer was ready to go home, a man came to him and pressured him to answer his questions. Under the pressure of his client he had to answer his questions. As soon as the man lit his cigar, the astrologer caught a glimpse of his face by the matchlight. The astrologer felt uncomfortable yet he gathered courage.

The man said, "Shall I succeed in my present search ?" The astrologer said, "You were left for dead. Am I right ?" "Ah, tell me more." "A knife has passed through you.once ?" said the astrologer. "Good fellow !" He bared his chest to show the scar. "What else ?" "And then you were pushed into a well near by in the field. You were left for dead." "I should have been dead if some passer-by had not chanced to peep into the well." exclaimed the other overwhelmed by enthusiasm. "When shall I get at him ?" he asked, clenching his fist. "In the next world," answered the astrologer. "He died four months ago irrä far off town. You will never see any more of him." The other groaned on hearing it. The astrologer proceeded." "Guru Nayak...."5.30g! WET "You know my name also ! the other said in a surprise."

"I know everything, Guru Nayak. Listen to me carefully. Your village is two days journey in the north. Take the next train and go away. There is a danger to your life if you go away from home. Take this sacred ash and rub it on your forehead and go home. Never travel southward again." The astrologer also told him that his enemy was crushed under a lorry and died. Hearing this the man was delighted. He gave the astrologer a handful of coins and went away. Now it was too late. The astrologer picked up his articles and reached home. His wife was waiting for him anxiously. After dinner he told her the whole story how he misguided his enemy and assured him that his enemy was not alive. So, he left his search. In this way from that day he was the most carefree man.

An Astrologer's Day Question Answer कहानी पर एक दृष्टि

एक बार एक नगर में एक ज्योतिषी इमली के पेड़ के नीचे एक व्यस्त चौराहे पर सवेरे से शाम तक बैठा करता था। वह ऐसे वस्त्र पहनता था और अपना सारा सामान अपने सामने इस प्रकार फैला लेता था कि बड़ी :संख्या में लोग उसकी ओर आकर्षित होते थे। वह उनके अधिकांश प्रश्नों के उत्तर भी इस प्रकार देता था कि उनमें से अधिकांश सन्तुष्ट हो जाते थे। एक दिन शाम को जब ज्योतिषी घर जाने को तैयार था, तब एक आदमी उसके पास आया और

अपने प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उस पर दबाव डाला। अपने ग्राहक के दबाव में उसके प्रश्नों के उत्तर उसे देने पड़े। ज्योंही उस व्यक्ति ने अपना सिगार जलाया, माचिस की रोशनी में ज्योतिषी ने उस व्यक्ति के चेहरे की झलक देखी। ज्योतिषी परेशान हो गया किन्तु उसने साहस बटोरी। उस व्यक्ति ने कहा, "क्या मैं अपनी वर्तमान तलाश में सफल होऊँगा या नहीं ?" ज्योतिषी ने कहा, "तुम मृतप्रायः छोड़ दिए गए थे। क्या मैं ठीक हूँ?.

अरे, मुझे कुछ और बताओ।" एक बार तुम्हारे ऊपर चाकू से वार हुआ।" ज्योतिषी ने कहा। अच्छे व्यक्ति," उसने अपने घाव दिखाने के लिए छाती खोली। और भी कुछ ?" और फिर तुम्हें खेत में पास के कुएँ में धकेल दिया गया। तुम्हें मृतप्रायः छोड़ा गया।" यदि कुछ व्यक्ति जो उस रास्ते से जा रहे थे कुएँ में न झाँकते तो मैं मर गया होता।' दूसरा व्यक्ति चिल्लाया। वह आदमी जोश में भर गया। अपनी मुट्ठी मारते हुए उसने पूछा, "मैं उसे कब पकड़ पाऊँगा ?"अगले संसार में," ज्योतिषी ने उत्तर दिया, "वह चार महीने पूर्व एक दूर के नगर में मर गया। तुम उसे अब कभी नहीं देख पाओगे।' यह सुनकर दूसरा व्यक्ति गुर्राया। ज्योतिषी ने आगे कहा— गुरु नायक !"

आप मेरा नाम भी जानते हो।' दूसरे व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा।। "ऐ गुरु नायक, मैं सभी कुछ जानता हूँ। मेरी बात ध्यान से सुनो। तुम्हारा गाँव उत्तर की ओर है। यात्रा में दो दिन लगते हैं। अगली गाड़ी पकड़ो और यहाँ से चले जाओ। यदि तुम घर से बाहर जाओगे तब तुम्हारे जीवन को खतरा है। यह पवित्र राख लो और इसे अपने माथे पर मलो और घर जाओ। दक्षिण की ओर पुनः यात्रा मत करना।" ज्योतिषी ने यह भी बताया कि उसका शत्रु एक लॉरी के नीचे कुचल गया और मर गया। यह सुनकर वह व्यक्ति बहुत प्रसन्न हुआ। उसने ज्योतिषी को एक मुट्ठी भर सिक्के दे दिए और चला गया। अब बहुत देर हो गई थी। ज्योतिषी ने अपना सामान उठाया और घर पहुँच गया। उसकी पत्नी उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। रात्रि भोजन के बाद उसने उसे पूरी कहानी सुना दी कि किस प्रकार उसने अपने दुश्मन को बहकाया और उसे विश्वास दिला दिया कि उसका दुश्मन जीवित नहीं है। इसलिए उसने अपनी तलाश छोड़ दी। इस प्रकार उस दिन से वह अत्यन्त निश्चिन्त व्यक्ति था।

https://www.evidyarthi.in/